

दानियेल की पुस्तक - संख्या तिरसठ

मिलर के चार्टों से परे: इस्लाम, अन्वेषणात्मक न्याय और अंतिम परीक्षा

Jeff Pippenger

2024-01-27

हमें यह बताया गया है कि "परमेश्वर ने विलियम मिलर के मन को भविष्यवाणियों की ओर निर्देशित किया और उन्हें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विषय में महान प्रकाश दिया।" मिलर जिस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में उठाए गए थे, उसी इतिहास ने उन्हें प्रकाशितवाक्य के अध्याय 12, 13, 16, 17 और 18 में निहित 'महान प्रकाश' को समझने से रोका, क्योंकि वे अध्याय उन भविष्यसूचक राज्यों के कार्य को चिह्नित करते थे जिन्हें वे अपने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देख नहीं सकते थे।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विषय में मिलर को जो प्रकाश मिला, वह कलीसियाओं, मुहरों और तुरहियों से संबंधित था, और इन्हीं में से अंतिम तीन तुरहियाँ—जिन्हें 'तीन हाय' के रूप में पहचाना गया है—हबककूक की दो पट्टिकाओं पर दर्शाई गई हैं। "महान प्रकाश", जो मिलर को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिया गया, बाइबल की भविष्यवाणी में इस्लाम की भूमिका से संबंधित है। फिर भी वह "महान प्रकाश" भी उनके ऐतिहासिक संदर्भ से सीमित था।

एशिया की सात कलीसियाएँ मसीह की कलीसिया का इतिहास हैं—उसके सात रूपों में, उसके सभी उतार-चढ़ावों में, उसकी समृद्धि और विपत्तियों के सारे दौर में—प्रेरितों के दिनों से लेकर जगत के अंत तक। सात मुहरें पृथ्वी के सत्ताधारियों और राजाओं द्वारा कलीसिया के संबंध में की गई कार्यवाहियों का इतिहास हैं, और उसी समय अपने लोगों की परमेश्वर द्वारा की गई रक्षा का भी। सात तुरहियाँ पृथ्वी पर, या रोमी राज्य पर, भेजे गए सात विशिष्ट और भारी दण्डों का इतिहास हैं। और सात कटोरे पापल रोम पर भेजी गई सात अंतिम विपत्तियाँ हैं। इनके साथ अनेक अन्य घटनाएँ भी मिली हुई हैं, जो सहायक धाराओं की तरह इनमें बुनी गई हैं, और भविष्यवाणी की उस महान नदी को भरती जाती हैं, जब तक कि सब मिलकर हमें अनंतता के महासागर तक न पहुँचा दें।

"यह, मेरे विचार में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जॉन की भविष्यवाणी की रूपरेखा है। और जो व्यक्ति इस पुस्तक को समझना चाहता है, उसे परमेश्वर के वचन के अन्य भागों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इस भविष्यवाणी में प्रयुक्त प्रतीक और रूपक सब के सब उसी में नहीं समझाए गए हैं, बल्कि उन्हें अन्य भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में ढूँढ़ना होगा और पवित्रशास्त्र के अन्य अंशों में उनकी व्याख्या मिलती है। इसलिए यह स्पष्ट है कि किसी भी भाग का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी, परमेश्वर ने ऐसा ठहराया है कि संपूर्ण का अध्ययन किया जाए।" विलियम मिलर, मिलर के व्याख्यान, खंड 2, व्याख्यान 12, 178.

ध्यान दें कि मिलर अंतिम सात विपत्तियों को पोपवादी रोम पर आने वाले सात न्यायिक दंड मानता था। वह यह नहीं समझ सका कि पोपवादी रोम को एक घातक घाव दिया गया था, जो भर जाना था। उसने सात तुरहियों को "पृथ्वी, या रोमन राज्य, पर भेजे गए सात विलक्षण और गंभीर न्यायों का इतिहास" माना, परंतु वह मूर्तिपूजक रोम और पोपवादी रोम के राज्यों के बीच के भेद को नहीं पहचान सका। अतः पहली चार तुरहियों और अंतिम तीन तुरहियों के बीच के अंतर को देखने की उसकी क्षमता सीमित रही।

मिलर यह पहचान नहीं सका कि रोम के विरुद्ध लाए गए न्याय, रविवार के पालन को लागू कराने के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रिया थे, क्योंकि मिलराइट अपने इतिहास में उस समय अभी भी रविवार को उपासना करते थे। मिलर इस बात को पहचानने में सही था कि तुरहियाँ रोम पर न्याय थीं, परंतु इन न्यायों के लाए जाने का विशिष्ट कारण, और पहली चार तथा अंतिम तीन तुरहियों के बीच का भेद, या तो सीमित था, या था ही नहीं। उस सीमित दृष्टि के साथ, इस्लाम की तीन विपत्तियों का "रत्न" अभी भी उन चार्टों में शामिल था जो परमेश्वर के हाथ से निर्देशित थे, और उनमें

परिवर्तन नहीं किया जाना चाहिए।

प्रबुद्ध विवेक भविष्यवाणी के “ज्ञानी” विद्यार्थी को यह पहचानने में सक्षम बनाता है कि परमेश्वर ने न केवल उन पवित्र पुरुषों को प्रेरित किया जिन्होंने बाइबल लिखी, बल्कि उन्होंने किंग जेम्स बाइबल का अनुवाद करने वाले पुरुषों के कार्य का भी निर्देशन किया, और वे विशेष रूप से कहते हैं कि दो पवित्र चार्टों की तैयारी में भी उन्होंने उसी प्रकार की दिव्य निगरानी का प्रयोग किया।

पाँचवीं, छठी और सातवीं तुरहियों (इस्लाम) के विषय में मिलर का 'रत्न' अंतिम दिनों में दस गुना अधिक चमकता है, क्योंकि वह अंतिम 'आधी रात की पुकार' के विषय की पहचान कराता है। मिलराइट इतिहास में 'आधी रात की पुकार' का विषय भविष्यसूचक अवधियों के समापन की तिथि था, और इसी अर्थ में अंतिम दिनों का 'आधी रात की पुकार' संदेश (जो तीसरी विपत्ति का इस्लामी संदेश है) 22 अक्टूबर, 1844 की तिथि द्वारा प्रतिरूपित किया गया है। मिलराइट इतिहास में वही तिथि शीघ्र आने वाले रविवार के कानून का प्रतिरूप है, और 22 अक्टूबर, 1844 तथा रविवार के कानून—दोनों—का प्रतिरूप क्रूस था, जो मसीह के विजय-प्रवेश का निष्कर्ष था।

पाँचवीं, छठी और सातवीं तुरही (इस्लाम) के विषय में मिलर का "रत्न" अंतिम दिनों में दस गुना अधिक चमकता है, क्योंकि यह अंतिम दिनों के सुधार आंदोलन की थीम के अनुरूप इस्लाम की पहचान करता है, जो कि तीसरे "हाय" का इस्लाम है। इसलिए, एक लाख चवालीस हजार के अंतिम सुधार आंदोलन की थीम होने के नाते, इसे पूर्ववर्ती प्रत्येक सुधार आंदोलन की थीम द्वारा प्रतिरूपित किया गया है, चाहे वह मसीह के सुधार आंदोलन में "पुनरुत्थान" की थीम हो, मिलराइटों के इतिहास में "भविष्यवाणी का समय" की थीम हो, दाऊद के सुधार आंदोलन में "परमेश्वर के सन्दूक" की थीम हो, या मूसा के सुधार आंदोलन में "वाचा" की थीम।

चाहे वह क्रूस की घटना हो, 22 अक्टूबर, 1844 की तिथि हो, या सुधारवादी आंदोलनों के विभिन्न विषय हों—हर तिथि और हर विषय उस समय की पीढ़ी के लिए जीवन-मरण की परीक्षा का प्रश्न था। इस्लाम की तीन हायें का मिलर का 'रत्न' भी जीवन-मरण की परीक्षा का प्रश्न है, जैसा कि दस कुँवारियों के दृष्टान्त में 'तेल' के संदर्भ में दर्शाया गया है। अपने स्वप्न की शुरुआत में मिलर के रत्न सूर्य के समान चमकते थे, पर उसके स्वप्न के अंत में वे 'दस गुना अधिक उज्ज्वल' चमके। मिलरवादियों के इतिहास में मिलर के रत्न मानो मिट्टी का तेल (दीपक का तेल) थे, लेकिन आज वही रत्न रॉकेट ईंधन हैं!

मिलरवादियों ने दूसरी हाय की इस्लाम-संबंधी समय-भविष्यवाणी को समझा और उसे सही रूप से लागू भी किया, जो 11 अगस्त, 1840 को पूरी हुई; परंतु तीसरी हाय, जो सातवीं तुरही है, के विषय में उनकी समझ तीसरी हाय को बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य पर आने वाले न्याय के रूप में नहीं देख सकी, क्योंकि वे पाँचवें राज्य को ही नहीं पहचानते थे, तो बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य की तो बात ही छोड़िए। फिर भी "प्रकाशितवाक्य" के विषय में जो "महान प्रकाश" मिलर को दिया गया था, वह अंतिम दिनों की "मध्यरात्रि की पुकार" में दस गुना अधिक चमकेगा।

हबक्कूक की दो पट्टिकाओं पर दर्शाई गई सच्चाइयाँ मूलतः वे सच्चाइयाँ हैं जो अतीत के इतिहास में पूरी हो चुकी थीं। ये चार्ट उन समय-भविष्यवाणियों पर आधारित हैं जिन्हें संकलित करने के लिए मिलर को प्रेरित किया गया था, और वे सभी समय-भविष्यवाणियाँ 1844 तक समाप्त हो चुकी थीं। वे समय-भविष्यवाणियाँ अन्तिम दिनों में और अधिक उज्ज्वल होंगी, क्योंकि यह दिखेगा कि वे आज भी उतनी ही सटीक हैं जितनी वे मिलराइट इतिहास में थीं; परन्तु उनमें अन्तिम दिनों के लिए कोई प्रत्यक्ष समय-भविष्यवाणी नहीं है। फिर भी, वे अतीत में जिन इतिहासों का प्रतिनिधित्व करती थीं, उनके पुनरावर्ती भविष्यसूचक प्रतिरूप प्रदान करती हैं; और मिलर के कुछ रत्नों के साथ, भविष्य के लिए प्रत्यक्ष भविष्यवाणियाँ भी प्रस्तुत होती हैं।

1844 में आरम्भ हुआ स्वर्गीय पवित्रस्थान में मसीह का कार्य तब तक जारी रहता है जब तक वह कार्य पूरा नहीं हो जाता। तेईस सौ दिनों की भविष्यवाणी, और वह शुद्धिकरण का कार्य जिसे उसने चिन्हित किया, अब भी "पूर्ति की

प्रक्रिया में" है, जैसा कि सिस्टर वाइट ने उलै और हिदेकेल नदियों के संबंध में कहा है, इसलिए उस भविष्यवाणी की पूर्ति संसार के अंत में होती है।

"जो प्रकाश दानियेल को परमेश्वर से मिला था, वह विशेष रूप से इन अंतिम दिनों के लिए दिया गया था। शिनार की महान नदियों उलै और हिदेकेल के किनारों पर उसने जो दर्शन देखे थे, वे अब पूरी होने की प्रक्रिया में हैं, और पूर्वकथित सभी घटनाएँ शीघ्र ही घटित होंगी।" Testimonies to Ministers, 112.

दानियेल के अध्याय सात और आठ के दर्शनों के जो हिस्से दो तालिकाओं पर हैं, वे अभी भी भविष्य के हैं, क्योंकि दोनों मसीह के पवित्रस्थान संबंधी कार्य की पहचान कराते हैं। फिर भी उन दोनों अध्यायों में बाइबल की भविष्यवाणी में वर्णित राज्यों का इतिहास उस बिंदु पर समाप्त होता है जब पोप-शासित रोम अपना घातक घाव प्राप्त करता है। वह "पत्थर" जो "पहाड़ से बिना हाथों के काटा गया", और दानियेल अध्याय दो का आठवाँ राज्य, अभी भी भविष्य में हैं। परंतु दानियेल के अध्याय दो, सात और आठ के संबंध में चार्टों पर जो कुछ दर्शाया गया है, उसका अधिकांश पूरा हो चुका है।

पवित्रस्थान में मसीह का कार्य और इस्लाम का तीसरा 'हाय' मूलतः वे दो विषय हैं जो मिलरवादियों के समय के बाद के भविष्यसूचक इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन दो विषयों के साथ वह अंतिम दिनों का इतिहास भी सम्मिलित है, जो तब प्रतिरूपित होता है जब दोनों चार्टों को एक ही रेखा पर साथ रखा जाता है। जब ऐसा किया जाता है, तो पहले चार्ट पर दर्शाई गई 1843 की पहली निराशा का सुधार दूसरे चार्ट पर मिलता है। ये दोनों मिलकर 'सात गर्जनाओं' के 'गुप्त इतिहास' को प्रकट और चिन्हित करते हैं, जो अब 'यीशु मसीह के प्रकाशन' की मुहर खुलने के साथ ही खोला जा रहा है।

वह "गुप्त इतिहास" "सत्य" पर आधारित है, जो तीन हिब्रू अक्षरों से बना है; ये अक्षर मिलकर "सत्य" शब्द बनाते हैं। यह शब्द हिब्रू वर्णमाला के पहले, तेरहवें और अंतिम अक्षर से बना है, और यह यीशु को न केवल सत्य के रूप में, बल्कि अल्फा और ओमेगा के रूप में भी दर्शाता है। "गुप्त इतिहास" एक निराशा से शुरू होता है और एक निराशा पर ही समाप्त होता है, और बीच में विद्रोह है, क्योंकि "तेरह" एक संख्या है जो विद्रोह का प्रतिनिधित्व करती है।

पहले चार्ट पर चित्रित 1843 का वर्ष पहली निराशा और विलंब के समय के आगमन को चिन्हित करता है। विलंब का समय 'आधी रात की पुकार' के संदेश के आगमन तक ले जाता है; इसी समय मूर्ख कुंवारियों का विद्रोह प्रकट होता है। इसके बाद 'आधी रात की पुकार' का संदेश अंतिम निराशा तक प्रचारित किया जाता है। 'आधी रात की पुकार' का वह "छिपा हुआ इतिहास" (अक्षरशः) अंतिम दिनों में दोहराया जाता है।

"मुझे प्रायः दस कुंवारियों के दृष्टान्त की ओर संकेत किया जाता है, जिनमें पाँच बुद्धिमान थीं, और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका इस समय पर विशेष अनुप्रयोग है, और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के समान, यह पूरा हुआ है और समय के अंत तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।" Review and Herald, August 19, 1890.

जब सही ढंग से समझा जाए, तो पिछला कथन यह स्पष्ट करता है कि आखिरी दिनों में जो लोग मूर्ख या बुद्धिमान कुंवारियों में से किसी के रूप में पाए जाने की संभावना रखते हैं, वे वही हैं जो ऐसे किसी समूह के सदस्य हैं जिसने एक निराशा झेली है। वही निराशा प्रतीक्षा का समय उत्पन्न करती है, और वह दृष्टान्त जो "अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा" इस बात पर आधारित है कि निराशा से शुरू होने वाले उस प्रतीक्षा के समय में कुंवारियों के भीतर कौन से आंतरिक प्रभाव उत्पन्न होते हैं। वह निराशा, जिसने नगर की सड़क पर "दो गवाहों" को मार डाला और उन्हें मृत्यु की घाटी में सूखी, मृत हड्डियों में बदल दिया, 18 जुलाई, 2020 को हुई। एडवेंटवाद, कुल मिलाकर, उस निराशा में सम्मिलित नहीं था। बल्कि, जब "दो गवाह" सड़क पर मारे पड़े थे, तो उन्होंने असफल हुई उस भविष्यवाणी का जश्न मनाया। "अक्षरशः" का अर्थ "अक्षरशः" ही होता है।

मिलराइट इतिहास में, पूर्व वाचा के लोग (प्रोटेस्टेंटवाद) ने 1843 की असफल भविष्यवाणी (पहली निराशा) का उत्सव मनाया, और उसी समय प्रोटेस्टेंट अपने परीक्षा-काल की सीमाएँ पार कर गए। परीक्षा-काल 11 अगस्त, 1840 को शुरू हुआ, जब प्रकाशितवाक्य 10 का शक्तिशाली स्वर्गदूत दूसरे हाय (इस्लाम) की समय-भविष्यवाणी की पूर्ति पर उतर आया। प्रोटेस्टेंटों ने पहली निराशा के समय भविष्यसूचक समय को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि गलत भविष्यवाणी ने उन्हें अब आगे सत्य की खोज न करने का बहाना दे दिया। मिलराइट इतिहास के सभी मार्गचिह्नों का विषय "समय-भविष्यवाणी" था।

11 सितंबर, 2001 को, प्रकाशितवाक्य अठारह का स्वर्गदूत तीसरे 'हाय' (इस्लाम) की भविष्यवाणी की पूर्ति के समय उतरा। अंतिम दिनों के सभी मार्गसूचक चिन्हों का विषय इस्लाम है। पहली निराशा पूर्व वाचा के लोगों के शुद्धिकरण के अंत को चिह्नित करती है, क्योंकि तब पूर्व वाचा के लोगों को सत्य की खोज न करने का एक बहाना मिल गया। तब अंतिम दिनों की "कुँवारियों" के लिए परीक्षाकाल आरंभ हुआ, क्योंकि स्वर्गदूत के उतरने के साथ जो पूर्व वाचा के लोगों की परीक्षा आरंभ हुई थी, वह पहली निराशा पर समाप्त हो गई। इस प्रकार, जिनको "कुँवारियाँ" के रूप में दर्शाया गया है, उनकी परीक्षा आरंभ हुई, और यह परीक्षण-प्रक्रिया अंततः प्रकट कर देगी कि वे कुँवारियाँ मूर्ख हैं या बुद्धिमान।

पहली और अंतिम निराशा के बीच, मध्यरात्रि की पुकार का संदेश है। मिलराइट्स के लिए मध्यरात्रि की पुकार के संदेश का विषय "समय" था, और अंतिम दिनों में मध्यरात्रि की पुकार के संदेश का विषय "इस्लाम" है। मिलर के स्वप्न में वह एक पुकार (चिल्लाहट) से जाग उठता है, और उस समय उसके रत्न पहले से दस गुना अधिक चमकते हैं। चार्टों पर जो रत्न हैं, जो सीधे तौर पर अंतिम दिनों के लिए एक भविष्यवाणी की पहचान कराते हैं, वे "इस्लाम" और "अन्वेषणात्मक न्याय" हैं। अतः मध्यरात्रि की पुकार के "संदेश" की परीक्षाएँ और अन्वेषणात्मक न्याय द्वारा दर्शाए गए "अनुभव" की परीक्षाएँ पूर्व वाचा के लोगों के लिए नहीं हैं, बल्कि उनके लिए हैं जो स्वयं को अंतिम कुँवारी कन्याएँ होने का दावा करते हैं।

जब दोनों चार्टों को एक साथ रखा जाता है तो जो चित्रण प्राप्त होता है, जो पहली से अंतिम निराशा तक के इतिहास की पहचान करता है, वह यह प्रकट करता है कि जिस समय सात गर्जनों का 'छिपा हुआ इतिहास' घटित हो रहा होता है, उसी समय अन्वेषणात्मक न्याय का अंतिम कार्य संपन्न किया जा रहा होता है। वह अंतिम कार्य एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाना है, और यह दानियेल अध्याय नौ के 'कठिन समयों' में, प्रकाशितवाक्य ग्यारह में राष्ट्रों के क्रोधित होने के दौरान, प्रकाशितवाक्य अध्याय सात की 'चार हवाओं' को रोके रखने के समय, यशायाह अध्याय सत्ताईस में 'पूरबी वायु के दिन कठोर वायु को रोक दिए जाने' के समय, तथा 'छूटकर संसार पर मृत्यु और विनाश लाने का प्रयास कर रहे क्रोधित घोड़े' पर अंकुश के दौरान होता है। ये सब भविष्यवाणी-संबंधी साक्षी, पवित्र चार्टों पर दर्शाए अनुसार, तीसरे 'हाय' के इस्लाम का प्रतिनिधित्व करते हैं।

हबक्कूक के दो पवित्र चार्टों के तीन प्रमुख तत्व, जो विशेष रूप से उन घटनाओं को संबोधित करते हैं जो चार्टों के प्रकाशन के समय भविष्य की थीं, ये हैं: एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी, इस्लाम और दस कुँवारियों के दृष्टान्त की पूर्ति। चार्ट एक "अनुभव" और एक "संदेश" दोनों की परीक्षण और मुहरबंदी की प्रक्रिया को दर्शाते हैं। मूर्ख कुँवारी के लिए आवश्यक "अनुभव" है "मसीह तुम में, महिमा की आशा", जो एक लाख चवालीस हज़ार द्वारा प्रदर्शित पूर्णता का प्रतिनिधित्व करता है।

वह भेद जो युगों और पीढ़ियों से छिपा रहा, पर अब अपने पवित्र जनों पर प्रकट किया गया है; जिन्हें परमेश्वर यह प्रकट करना चाहता था कि अन्यजातियों के बीच इस भेद की महिमा का वैभव क्या है; अर्थात् मसीह तुम में, महिमा की आशा। उसी का हम प्रचार करते हैं, हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हुए और हर एक मनुष्य को समस्त बुद्धि से सिखाते हुए, ताकि हम हर एक मनुष्य को मसीह यीशु में सिद्ध करके प्रस्तुत करें। कुलुसियों 1:26-28.

एक लाख चवालीस हज़ार को ऐसे लोगों के समूह के रूप में दिखाया गया है जो "कैद" से बाहर आए हैं। वह कैद जो सीधे तौर पर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दिखायी गई है, साढ़े तीन दिनों तक सड़क पर मरे पड़े रहने की कैद है, जैसा कि प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह में दिखाया गया है। प्रतीकात्मक मृत्यु की यह कैद लैव्यवस्था अध्याय छब्बीस के "सात बार" का प्रतिनिधित्व करती है, और वह कैद पश्चाताप की अभिव्यक्ति की आवश्यकता रखती है, जैसा कि अध्याय नौ में दानियेल की प्रार्थना द्वारा दिखाया गया है।

जब मृत सूखी हड्डियों को पुनर्जीवित किया जाता है, तो उन्हें तुरंत एक 'ensign' के रूप में ऊँचा उठा दिया जाता है। मृत्यु की अवस्था में उनके भीतर मसीह नहीं थे, जो महिमा की आशा हैं। उनके लिए आवश्यक पश्चाताप का एक भाग यह स्वीकार करना था कि वे परमेश्वर के विरोध में चले थे, और यह कि परमेश्वर भी उनके विरोध में चला था। जब वे भविष्यवाणी द्वारा बताई गई आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, तब मसीह 'अचानक अपने मंदिर में आते हैं', और वह 'अनुभव' प्राप्त हो जाता है जो उस 'ensign' का सदस्य बनने के लिए आवश्यक है जिसे तब ऊँचा उठाया जाता है।

जब दोनों चार्टों को साथ रखा जाता है, तब जो "अनुभव" प्रदर्शित होता है, वह स्वर्गीय पवित्रस्थान में मसीह के अंतिम कार्य द्वारा पूरा किया जाता है। वह "अनुभव" "mareh" दर्शन द्वारा प्रस्तुत किया गया है, जो "प्रकट रूप" का दर्शन है। जिस "संदेश" की आवश्यकता है, वह भविष्यवाणी के इतिहास का "chazon" दर्शन है। उस "संदेश" की पहचान एक विद्रोही संसार पर आने वाले परमेश्वर के आसन्न न्याय के संदेश के रूप में की गई है, जो तीसरे Woe के इस्लाम द्वारा लाया जाता है।

1856 में, प्रभु ने एडवेंटिज़्म के भीतर आत्मिक यरूशलेम के पुनर्निर्माण को पूरा करना चाहा। 1798 से 1844 तक तीन स्वर्गदूतों के आगमन के दौरान, मिलरवादी मंदिर उन नींवों पर खड़ा किया गया था, जिन्हें मिलर के स्वप्न में "रत्न" के रूप में दिखाया गया था—अर्थात् 1843 और 1850 के दो प्रवर्तक चार्टों पर प्रस्तुत वे भविष्यसूचक सत्य, जिन्होंने हबक्कुक अध्याय दो को पूरा किया था। फिर उसने अपनी प्रजा का नेतृत्व किया कि वे उसके सातवें दिन के सब्त की व्यवस्था की दीवार खड़ी करें, और उन्हें प्राचीन इस्राएल के "पुराने मार्गों" पर लौटा दिया, ताकि "चलने के मार्ग" का काम पूरा हो सके। परंतु, उस पुराने मार्ग में एक शिक्षा, एक भविष्यवाणी भी सम्मिलित थी, जो उनकी परीक्षा लेने और उन्हें अलग करने के लिए बनाई गई थी। 1863 में, एडवेंटिज़्म "सात समय" की परीक्षा में असफल हो गया, और लाओदीकिया की मरुभूमि में भटकने लगा।

22 अक्टूबर, 1844, शीघ्र आने वाले रविवार के कानून का प्रतीक है, और रविवार के कानून के समय, दानियेल द्वारा चिन्हित कठिन समयों में सड़क और दीवार को पूरा करने के उन उन्नचास वर्षों द्वारा दर्शाया गया कार्य पूरा हो जाएगा।

अतः जान ले और समझ ले कि यरूशलेम को पुनः स्थापित करने और बनाने की आज्ञा के जारी होने से लेकर अभिषिक्त प्रधान तक सात सप्ताह और बासठ सप्ताह होंगे; गली फिर से बनाई जाएगी, और दीवार भी, वह भी संकटमय समयों में। दानियेल 9:25।

सभी भविष्यद्वक्ता आपस में सहमत हैं, और दानियेल के "कठिन समय" की पहचान भी Early Writings के उस अंश में की गई है जिस पर हम विचार कर रहे हैं।

उस समय, जब उद्धार का कार्य समापन पर होगा, पृथ्वी पर क्लेश आएँगे, और राष्ट्र क्रोधित होंगे, फिर भी उन्हें इस प्रकार नियंत्रित रखा जाएगा कि तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में बाधा न पड़े। उसी समय 'परवर्ती वर्षा', या प्रभु की उपस्थिति से मिलने वाली ताज़गी, आएगी, ताकि तीसरे स्वर्गदूत की ऊँची आवाज़ को शक्ति मिले, और संतों को तैयार किया जाए कि वे उस अवधि में दृढ़ बने रहें जब सात अंतिम विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी। प्रारंभिक लेखन, 85.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

जब तक सत्य का अंगीकार करने वाले लोग शैतान की सेवा करते रहेंगे, उसकी नर्कीय छाया उन्हें परमेश्वर और स्वर्ग का दर्शन करने से वंचित कर देगी। वे उन लोगों के समान होंगे जिन्होंने अपना पहला प्रेम खो दिया है। वे

शाश्वत वास्तविकताओं को नहीं देख सकेंगे। जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है, वह जकर्याह, अध्याय 3 और 4, तथा 4:12-14 में दर्शाया गया है: 'और मैंने फिर उत्तर दिया, और उससे कहा, ये दो जैतून की डालियाँ क्या हैं, जो दो स्वर्ण नलिकाओं के द्वारा अपने आप से स्वर्ण तेल उंडेलती हैं? और उसने मुझे उत्तर दिया और कहा, क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं? मैंने कहा, नहीं, मेरे प्रभु। तब उसने कहा, ये वे दो अभिषिक्त हैं, जो सारी पृथ्वी के प्रभु के पास खड़े हैं।'

प्रभु संसाधनों से परिपूर्ण हैं; उन्हें किसी भी साधन की कमी नहीं है। हमारे विश्वास की कमी, हमारी सांसारिकता, हमारी खोखली बातें, हमारा अविश्वास—जो हमारी बातचीत में प्रकट होता है—इन्हीं के कारण हमारे चारों ओर अंधकारमय छायाएँ घिर आती हैं। हमारी वाणी और आचरण में मसीह उस सर्वथा मनोहर, दस हज़ार में श्रेष्ठतम के रूप में प्रकट नहीं होते। जब आत्मा निरर्थक दंभ में स्वयं को ऊँचा उठाने पर संतुष्ट हो जाती है, तब प्रभु का आत्मा उसके लिए बहुत कम कर पाता है। हमारी निकटदर्शी दृष्टि छाया को तो देखती है, पर उसके पार की महिमा को नहीं देख पाती। स्वर्गदूत चारों पवनों को थामे हुए हैं; उन्हें एक क्रोधित घोड़े के रूप में दर्शाया गया है, जो बंधन तोड़कर सारी पृथ्वी पर दौड़ जाने को उतावला है, अपनी राह में विनाश और मृत्यु साथ लिए हुए।

“क्या हम अनन्त संसार की ठीक दहलीज़ पर सोए रहेंगे? क्या हम सुस्त, शीतल, और मृतवत् बने रहेंगे? ओह, काश हमारी कलीसियाओं में परमेश्वर का आत्मा और श्वास उसके लोगों में फूँका जाए, ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हों और जीवित रहें। हमें यह देखना आवश्यक है कि मार्ग संकीर्ण है, और फाटक तंग है। परन्तु जब हम उस तंग फाटक से होकर प्रवेश करते हैं, तब उसकी विशालता असीम होती है।” Manuscript Releases, volume 20, 217.